

अप्रियं धातुव्यमभ्यतिरिच्येत TBa. 1, 2, 3, 4, 5, 1. ÇAT. Br. 1, 9, 1, 18. पञ्चमानस्य अप्रियम् 3, 9, 3, 34. 11, 1, 2, 5. KĀTH. 26, 4. KĀTH. ÇR. 25, 13, 17. — आ überlassen: स मुन्वत इन्द्रः सूर्यमा देवो रिणाञ्चर्त्तयि स्त्वान् RV. 2, 19, 5. AV. 18, 3, 41. — Vgl. अरिक्. — caus. 1) den Athem entlassen: अरिच्य Verz. d. Oxf. H. 234, b, 35. — 2) अरिचित in Verbindung mit श्रु so v. a. verzogen (= ऐकिकेशो निवर्तिता MALLIN.) KUMĀRAS. 3, 5. MĀLATĪM. 68, 9. DAÇAK. 78, 2.

— उद् med. pass. hinausreichen über, hervorragen, vorzüglicher sein als: उत्सुकलाद्रिचि कृष्टिषु शत्रुः RV. 1, 102, 7. उद्विच्यस्य रिच्यते ऽशः 7, 32, 12. ममैवोद्विच्यते जन्म — तव जन्मनः MBh. 1, 3070. उत्तरोत्तरमेतेभ्यो वर्षमुद्विच्यते गुणैः 6, 234. उद्विक्त hinausreichend über (acc.): शिखरैः खमिवोद्विक्तैः R. GOBR. 2, 103, 4. überschüssig, übermäßig, im Uebermaass vorhanden, überflüssig, übrig TS. 7, 3, 30, 1. ऀCV. ÇR. 2, 7, 21. MBh. 14, 1064. fg. Suçr. 1, 81, 6. 2, 373, 18. °मन्मथा KATHĀS. 94, 52. MĀRK. P. 48, 5. °रसान्गुडादीन् KULL. zu M. 2, 177. DAÇAK. 132, 1. अनुद्विक्तावनूनी MĀRK. P. 46, 5. अनुद्विक्त (पुर = शरीर) nirgends ein Uebermaass zeigend MBh. 14, 987. तमसोद्विक्तः im Uebermaass versehen mit MĀRK. P. 17, 10. रजसोद्विक्ताः VP. bei Muir, ST. I, 22. बल्लोद्विक्त überlegen an, reichlicher versehen mit MBh. 1, 5543. सख्योद्विक्त im Uebermaass versehen mit RĀĠA-TAR. 3, 343. VP. bei Muir, ST. I, 22. MĀRK. P. 17, 6, 43, 48. सद्भावोद्विक्तचित्त PANĀR. 1, 6, 12. तद्व्यानोद्विक्तया भक्त्या gesteigert durch Bhāg. P. 1, 13, 47. उद्विक्तचेतस् hochsinnig KATHĀS. 32, 73. उद्विक्तचित्त hochmüthig 91, 55. उद्विक्त dass. MBh. 5, 7044. Spr. 3246, v. 1. — Vgl. उद्वेक. — caus. steigern: अधिकेद्विचिताभिष्यम् adv. RĀĠA-TAR. 5, 365. — Vgl. उद्वेक.

— समुद्, partic. समुद्विक्त im Uebermaass versehen mit (instr.) VP. bei Muir, ST. I, 22.

— नि ५. निरेक.

— प्र med. pass. hinausreichen, hervorragen über: दिवश्चित्ते प्र रिचिचे मक्त्वम् RV. 1, 39, 5. 61, 9. 109, 6. 164, 25. त्वं तान्सं च प्रति चासि ममनामे प्र चं देव रिच्यते 2, 1, 15. 22, 2. 3, 6, 2. प्र मात्राभौ रिचिचे रोचमानः 46, 3. 6, 24, 3. 30, 1. 7, 42, 3. प्र हि रिचित् श्रोत्रासा दिवो अन्तेभ्यस्परि 8, 77, 5. 10, 32, 5. TS. 7, 3, 30, 1. — Vgl. प्ररिचान्, प्ररेक fg. — caus. übriglassen: पित्रो नारिरेचीत्किं चून प्र RV. 6, 20, 4. lassen: प्रिया यमस्तन्वम् प्रारिरेचीत् 10, 13, 4.

— वि med. pass. 1) hinausreichen: अतश्चिदस्य मक्त्वा वि रेचि RV. 4, 16, 5. — 2) Durchfall bekommen: यः सोमं पीत्वा हर्षयेत विरिच्येत वा LĪTJ. 8, 10, 9. विरिक्त der seinen Leib entleert hat M. 5, 144. Suçr. 2, 326, 20. — Vgl. विरेक. — caus. leeren, leer machen: कोशमस्य विरेच्य MBh. 12, 3920. laxiren, ausputzen Suçr. 1, 44, 13. 150, 19. 2, 174, 13. शिरः 16. विरेच्य als Erkl. von निर्यात्य von sich gegeben habend NĪLAK. zu HARIV. 4013. — Vgl. विरेक fg.

रिञ्, रैञ्ते (भर्त्तने) VOP. in Dhātup. 6, 19.

रिचि vgl. u. भृङ्गि°. WILSON nach ÇABDĀRTHAK.: the crackling or roaring of flame; a musical instrument; black salt.

रिणीनगर n. N. pr. einer Stadt Verz. d. Oxf. H. 114, a, No. 177.

रिप्व्, रिपवति (गता) Dhātup. 15, 86.

रिच् adj. etwa entrinnend (von 1. रि; nach ŚĪJ. = गन्त्री): यदिन्द्रे

अन्यद्विक्तौ मक्तीरिपो वृषत्तमः RV. 6, 57, 4.

रिद्ध adj. reif (Korn) H. 1183. — Vgl. रूद्ध.

रिधम m. 1) Frühling. — 2) Liebe Viçva im ÇKDr.

1. रिप् (= लिप्) 1) schmieren, kleben: यद्वा स्वैरो स्वर्धितो रिप्तमस्ति RV. 1, 162, 8. — 2) anschmieren so v. a. betriegen: कित्वासा यद्विरिपुर्न दीवि RV. 5, 83, 8.

— अपि, partic. °रिप्त verklebt so v. a. erblindet: युवं कण्वापापि रिप्ताय चतुः प्रत्यधत्तम् RV. 1, 118, 7. युवं कण्वाय नासत्यापि रिप्ताय कर्म्ये । शश्वद्दुतीर्दशस्यथः 8, 5, 23.

2. रिप् (= 1. रिप्) f. 1) Betrug, Kniff; concret Betrieger: मा नो गुह्या रिपं अपोरकन्दम् RV. 2, 32, 2. न देभति तं रिपः 7, 32, 12. अन्वे वेदि क्वात्राभिर्यजेत रिपः 60, 9. ये वा रिपौ दधिरे देवे अघुरे 104, 18. Vgl. पतिरिप्, welches demnach den Gatten täuschend bedeutet. — 2) nach NAIKH. 1, 1 (रिपः) und Comm. so v. a. Erde: पाति प्रियं रिपो अयं पदं वे: पाति यद्वृशरणं सूर्यस्य RV. 3, 5, 5. सप्तं न पृक्वामविदच्छुचतं रिच्छामं रिप उपस्थे अस्तः 10, 79, 3.

रिपुं (von 1. रिप्) UṅDIS. 1, 27. 1) adj. betrügerlich, verrätherisch; m. Betrieger, Schelm; später Widersacher, Feind NAIKH. 3, 24 (= स्तेन). AK. 2, 8, 2, 10. H. 728. HALĀS. 2, 300. RV. 1, 36, 16. दिप्सन् इन्द्रिपवो नाक् देभुः 147, 3. 148, 5. 2, 23, 16. पाशा रिपवे विचिताः 27, 16, 34, 9. मा सव्युर्दत्तं रिपोर्भुजेमं falscher Freund 4, 3, 13. स्तेना अद्वयविपवो जनासः 5, 3, 11. नेह्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सौ अर्चिया 79, 9. 7, 104, 10. 6, 51, 7. 13. डुरत्येतु रिपवे मर्त्याय 7, 63, 3. 8, 11, 4. 22, 14. 23, 15. 10, 185, 2. AV. 19, 49, 9. न कूटैरापुधैरुन्याम्युध्यमानो रणे रिपून् Feinde M. 7, 90. 98. 171. 183. 186. 200. °निपातिन् MBh. 3, 2492. 12, 4275. °सूदन R. 1, 52, 8. Suçr. 4, 108, 10. बलवति रिपौ वा सुहृदि वा Spr. 309. लोभात्त चान्यो ऽस्ति रिपुः पृथिव्याम् 1137. बलेन किं यश्च रिपून् बाधते 1301. न काश्चित्कस्यचिन्मित्रं न काश्चित्कस्यचिद्रिपुः । कारणादेव ज्ञायते मित्राणि रिपवस्तथा ॥ 1344. °रक्त 2634. आत्मैव ह्यात्मनो मित्रमात्मैव रिपुरात्मनः 3703. भुजोच्छिन्नरिपु RAGH. 2, 23. °भय Gefahr von Seiten des Feindes VARĀH. BRH. S. 53, 86. 119. °बल ein feindliches Heer 74, 3. °घ्न 79, 12. °कृन् (°कृणा MBh. 10, 620) 101, 13. 104, 23. °वशत् 79, 24. °नागकुलात्तक RĀĠA-TAR. 1, 89. शक्र° MBh. 3, 11912. क्रौञ्च° Spr. 64; vgl. H. 10 (wo die v. 1. रिपु st. अरि hat) und मदन°, मधु°. In der Astrol. ein feindlicher Planet VARĀH. BRH. S. 69, 6. — 2) m. Bez. des 6ten astrologischen Hauses: रिपुगते गौ VARĀH. BRH. S. 104, 28. BRH. 7, 14. 9, 4. LACHUÉ. 1, 15. °भवन n. dass. VARĀH. BRH. S. 104, 15. °भाव m. dass. Verz. d. B. H. No. 878. °स्थान n. dass. Verz. d. Oxf. H. 330, a, 2 v. u. — 3) m. N. pr. eines Sohnes des Çliṣṭi HARIV. 68. fg. VP. 98. des Jadu BĀL. P. 9, 23, 20.

रिपुघातिन् 1) adj. den Feind schlagend. — 2) f. °घातिनी eine best. Schlingpflanze ÇABDĀ. im ÇKDr. Abrus precatorius WILSON.

रिपुञ्जय 1) adj. den Feind bestiegend: बहूनां चैव सन्नानां समवायो रिपुञ्जयः Spr. 4623. आख्यायान Bhāg. P. 6, 13, 23. — 2) m. N. pr. verschiedener Fürsten, = दिवोदास Verz. d. Oxf. H. 70, a, 21. ein Sohn Çliṣṭi's HARIV. 68. VP. 98. Suvira's Bhāg. P. 9, 24, 29. Viçvaḡit's und letzter Fürst der Bārhadratha 22, 47. VP. 465.

रिपुता f. das Feindsein: रिपुतामुपैति wird zum Feinde Spr. 383.

रिपुमह m. N. pr. eines Fürsten ÇAT. 1, 222. 2, 660.